haribhoomi.com
पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल, विशेष
हरिभूमि
बालभूमि
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
शुक्रवार, 18 अप्रैल 2025

बच्चो, क्या तुम जानते हो हम सब जिस पृथ्वी पर रहते हैं, वो कितनी विविधताओं से भरी हुई है? इसकी विविधताएं ही इसे सौर मंडल का सबसे अनूठा ग्रह बनाती है। लेकिन हम इंसानों की लापरवाही से इस पर कई तरह के संकट बढ़ रहे हैं, इसका स्वरूप बिगड़ रहा है। हमारी धरती हमेशा हरी-भरी रहे, इसके लिए हमें जागरूक होना होगा।

हमेशा हरी-भरी रहे हमारी पृथ्वी

जागरूकता
देवेंद्र मेवाड़ी

बच्चो, पृथ्वी के बारे में हम तुम्हें कुछ रोचक बातें बताएं, इससे पहले आओ, जरा आसमान से अपनी प्यारी पृथ्वी पर नजर डालते हैं। देखें तो सही वहां से यह कैसी दिखती है? ओह, दूर अंधेरे में कितनी सुंदर लगती है हमारी प्यारी पृथ्वी! चमकीला नीला गोला, उस पर फैले घुंघराले श्वेत बादल, नीचे भूरे, हरे, हल्के पीले महाद्वीप, बर्फ से ढंके उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव। नील मणि-सी चमकती मां पृथ्वी का यह नीला रंग इसके विशाल नीले महासागरों के कारण दिखाई देता है।

विविधताओं से भरी

हमारे प्राचीन ग्रंथों में पृथ्वी को मां कहा गया है। सूर्य से दूरी के हिसाब से यह सौर मंडल का तीसरा ग्रह है। यह एक मात्र ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन है। हमारी पृथ्वी अपने आप में बहुत-सी विविधताओं को समेटे हुए है। इसमें कहीं ऊंची पर्वतमालाएं हैं तो कहीं दूर-दूर तक फैले मैदान, कहीं गहरी घाटियां हैं तो कहीं विशाल रेगिस्तान। कहीं हरे-भरे जंगल, तो कहीं विशाल दलदल। कहीं सदानीरा नदियां बहती हैं तो कहीं ऊंचे पहाड़ों से छल-छल झरने गिरते हैं। कहीं भीषण गर्मी पड़ती है तो कहीं कड़ाके की सर्दी। कहीं घनघोर वर्षा होती है तो कहीं बारिश का नामो-निशान नहीं होता।

इसलिए मौसम में होती है भिन्नता

हमारी पृथ्वी अपने अक्ष पर 23.5 डिग्री झुकी हुई है। साथ ही यह लगातार घूमती रहती है। जब यह अपनी धुरी पर घूमती है तो घूमते हुए लट्टू की तरह अंडाकार कक्षा में सूर्य की परिक्रमा भी करती है। इस सब का नतीजा यह होता है कि पृथ्वी के हर हिस्से पर साल भर सूर्य की रोशनी एक समान नहीं पड़ती। इसीलिए पृथ्वी की भूमध्य रेखा के आस-पास के हिस्सों में मौसम बेहद गर्म होता है। ज्यों-ज्यों हम उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ते हैं तो तपन कम होने लगती है और मौसम ठंडा लगने लगता है। और ध्रुवों पर तापमान न्यूनतम हो जाता है। ये हमारी पृथ्वी की जलवायु के विविध रंग हैं।

बिगड़ रहा है ऋतु चक्र

आज से कुछ दशक पहले तक अपने सही समय पर ऋतुएं बदलती थीं। समय पर वसंत आता था। मई-जून में गर्मी पड़ती थी, फिर वर्षा ऋतु आती थी। उसके बाद हेमंत ऋतु और फिर शीत ऋतु की ठिठुरन शुरू हो जाती थी। ऋतुओं के हिसाब से किसान खेती करते थे, बोआई और कटाई के उत्सव मनाते थे। पशु-पक्षी भी ऋतुओं के हिसाब से अपनी लंबी प्रवास यात्राएं करते थे या ठंडे प्रदेशों में गुफाओं, कोटरों और बिलों में सो जाते थे। नन्ही तितलियां वसंत के इंतजार में प्यूपा बन कर किसी टहनी, चट्टान या दीवार से लटक जाती थीं कि वसंत आएगा और वे पंख फड़फड़ा कर मधु और पराग चूसने के लिए फूलों के पास पहुंच जाएंगी। नदियां कल-कल बहा करती थीं, हरे-भरे जंगल ठंडी बयार बहाकर हमारी सांसों के लिए भरपूर मात्रा में प्राणवायु ऑक्सीजन दिया करते थे। जलवायु के साथ हर जीवधारी का संबंध हुआ करता था। लेकिन अब यह संबंध भी गड़बड़ा गया है। वसंत समय पर नहीं आता तो फूल भी समय पर नहीं खिलते। बेमौसम और असमान रूप से बरसात होती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन होने से मौसम में ये परिवर्तन हो रहे हैं। हम इंसानों की लापरवाही से ही पृथ्वी का प्राकृतिक स्वरूप और इसकी जलवायु बिगड़ रही है।

हम निभाएं अपनी जिम्मेदारी

पृथ्वी को इन तमाम संकटों से बचाने के लिए हम सभी को प्रयास करना होगा। बच्चो, इसमें सबसे बड़ी भूमिका तुम्हारी होगी। तुम ही देश, दुनिया के भविष्य हो। तुम्हें अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए, इस प्यारी पृथ्वी पर हरियाली बढ़ानी होगी। जल, थल और वायुमंडल को साफ रखना होगा। तभी यह प्यारी-निराली पृथ्वी रहने लायक रहेगी। *

चिंताजनक है ग्लोबल वार्मिंग

प्रकृति में आए परिवर्तन की वजह यह है कि विकास की एक ऐसी अंधी दौड़ शुरू हो गई है कि हर कहीं पेड़ों के जंगल के बजाय कंकरीट के जंगल (ढेरों मकान, भवन और ऊंची इमारतें) खड़े होने लगे हैं। हरे-भरे जंगल कटने लगे हैं और शहर फैलने लगे हैं। हम लोग यह भूल गए कि पेड़-पौधों और हरे-भरे जंगलों से ही हमें सांसें मिलती हैं। हम उनकी बनाई प्राणवायु ऑक्सीजन में ही सांस लेकर जीवित रहते हैं। इसीलिए प्रकृति ने हमारे लिए हवा में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसों की ठीक उतनी ही मात्रा रखी थी, जितनी हमारे सांस लेने के लिए जरूरी थी। लेकिन हरे-भरे जंगल कटने, शहरों के फैलने, सड़कों पर लाखों गाड़ियों के पेट्रोल से उत्पन्न होने वाले धुएं से हर साल लाखों टन कार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल में पहुंचने लगी। इससे वायुमंडल में प्रकृति द्वारा तय किया गया गैसों का अनुपात गड़बड़ा गया। परिणाम यह हुआ कि पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिक इसे वैश्विक तपन या ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। इस तपन के कारण ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है और ग्लेशियर भी पिघल कर सिकुड़ते जा रहे हैं। तापमान इसी तरह बढ़ता गया तो सागरों में पानी का स्तर बढ़ने से सागरतटों पर बसे शहरों के डूबने का खतरा पैदा हो जाएगा। पूरी दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग का संकट बढ़ता जा रहा है। इसे रोकना होगा।

यह भी जानो / शिखर चंद जैन

बहुत अनूठी हैं पृथ्वी की विशेषताएं

बच्चो, पृथ्वी (अर्थ) हमारे सौर मंडल का एकमात्र ग्रह है, जिस पर जीवन है। मनुष्य, पेड़-पौधे, जीव-जंतु सभी इस पृथ्वी पर रहते हैं। हमारी पृथ्वी के अलावा बाकी कुछ ग्रहों पर जीवन होने की संभावनाएं तो जताई गई हैं, लेकिन अभी तक इस बात की पुष्टि नहीं हो सकी है। इस लिहाज से पृथ्वी सौर मंडल के अन्य ग्रहों से अलग-अनूठी है।

कितनी पुरानी है पृथ्वी: विभिन्न वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि पृथ्वी लगभग 4.5 अरब साल पुरानी है। नेशनल सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन के वैज्ञानिकों ने चट्टानों और उल्कापिंडों की कार्बन-डेटिंग (प्राचीन वस्तुओं की उम्र पता लगाने की वैज्ञानिक विधि) करके इस अनुमानित आयु का पता लगाया है। हजारों साल तक मनुष्य यह मानता रहा कि पृथ्वी, ब्रह्मांड का केंद्र है। बाद में पता चला कि सूर्य, हमारे सौर मंडल के केंद्र में है और पृथ्वी समेत अन्य ग्रह उसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं।

पांचवां सबसे बड़ा ग्रह: पृथ्वी की भूमध्यरेखीय त्रिज्या (इक्वेटोरियल रेडियस) लगभग 6,378 किलोमीटर और व्यास (डायमीटर) लगभग 12,756 किलोमीटर है, जबकि इसकी ध्रुवीय त्रिज्या (पोलर रेडियस) लगभग 6,357 किमी और व्यास लगभग 12,714 किमी है। पृथ्वी हमारे सौर मंडल का पांचवां सबसे बड़ा ग्रह है।

पृथ्वी की परतें: परतों (लेयर्स) की बात करें, तो हमारी पृथ्वी को मुख्य रूप से तीन परतों में बांटा गया है- कोर, मेंटल और क्रस्ट। कोर पृथ्वी का सबसे आंतरिक भाग होता है। पृथ्वी के मध्य भाग को मेंटल कहते हैं, जबकि पृथ्वी के सबसे ऊपरी परत को क्रस्ट कहते हैं। क्रस्ट ही वह हिस्सा है, जिस पर मानव जीवन का अस्तित्व है।

लगातार गतिशील है पृथ्वी: बच्चो, हमारी पृथ्वी दो तरीके से गति करती है-घूर्णन (रोटेशन) और परिक्रमण (रिवॉल्यूशन)।

पृथ्वी अपने अक्ष (धुरी) पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। पृथ्वी को अपना एक घूर्णन पूरा करने में लगभग 24 घंटे का समय लगता है। अपने अक्ष पर लगातार घूमते रहने के कारण ही पृथ्वी पर दिन और रात होते हैं। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग 1667 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से घूमती है। घूर्णन के अलावा हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक दीर्घ वृत्ताकार (एलिप्टिकल) कक्षा में चक्कर भी लगाती है, जिसे परिक्रमण कहा जाता है। यह सूर्य के चारों ओर लगभग 1,07,226 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चक्कर लगाती है। सूर्य का एक चक्कर लगाने में पृथ्वी को 365.25 दिन का समय लगता है। परिक्रमण गति के कारण ही हमारी पृथ्वी पर ऋतु/मौसम परिवर्तन होता है।

पानी का भंडार: पृथ्वी पर जल का अथाह भंडार है। इसकी सतह का 71 प्रतिशत हिस्सा तो पानी से ही ढंका है। सिर्फ 29 प्रतिशत हिस्सा ही भूमि है। इस पानी में से केवल 3 प्रतिशत पानी ही मीठा/ताजा यानी अलवणीय और पीने योग्य है। बाकी 97 प्रतिशत पानी खारा है। पृथ्वी का लगभग 90 प्रतिशत ताजा पानी अंटार्कटिका की ध्रुवीय बर्फ के रूप में जमा हुआ है। *

तुम्हारे लिए नई किताब / विज्ञान भूषण

प्यारी-मनोरंजक कहानियां

बच्चो, बांग्ला भाषा की प्रसिद्ध लेखिका जया मित्र की बाल-कहानियों की किताब 'चार-पांच दोस्त' का हिंदी अनुवाद हाल में ही प्रकाशित होकर आया है। इसका अनुवाद किया है कल्लोल चक्रवर्ती ने। इसमें कुल चौदह कहानियां और एक नाटक संकलित है। इन कहानियों में बाग-बगीचे, फूलों वाले पेड़, नदी, पहाड़, जंगल, बारिश, चिड़िया, तितली आदि मौजूद हैं। इनके साथ नन्हे बच्चों की खिलंदड़ी हरकतें मन को लुभाती हैं। हम सभी के जीवन में प्रकृति की कितनी महत्ता है, इसे बड़े सरल ढंग से ये कहानियां बताती हैं। 'चार-पांच दोस्त', दो चिड़िया चड़ुआ-बड़ुआ, दो नन्ही बच्चियों रिया-पियाल और एक छोटे लड़के गौतम की प्यारी-सी कहानी है। 'उस बार पहाड़ में' और 'तितलियों का गांव' समेत सभी कहानियां तुम्हें अच्छी लगेंगी। *

किताब: चार-पांच दोस्त, **लेखिका:** जया मित्र, **अनुवाद:** कल्लोल चक्रवर्ती,
मूल्य: 175 रुपए, **प्रकाशक:** साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

हंसगुल्ले

चिंटू : अगर मिस्टर बीन सो जाए, तो हम उन्हें क्या कहेंगे?
मिंटू : पता नहीं। तुम्हीं बता दो, क्या कहेंगे?
चिंटू : सोयाबीन।
-रमन, रायपुर

पापा : आज मैथ्स टेस्ट में तुम्हारे कितने नंबर आए?
सोनू : मोनू से बीस नंबर कम।
पापा : अच्छा! मोनू के कितने नंबर आए हैं?
सोनू : बीस नंबर।
-अमन, बिलासपुर

कंप्यूटर टीचर : कंप्यूटर चलाने के लिए तुम्हें सबसे पहले ढंग से माउस पकड़ना आना चाहिए।
रोहित : लेकिन सर, माउस को तो बिल्लियां पकड़ती हैं।
-दीक्षा, रोहतक

जीके क्विज-150

1. पहला 'पृथ्वी दिवस' किस वर्ष मनाया गया था?
2. 'पृथ्वी दिवस' मनाने की शुरुआत का श्रेय किसे जाता है?
3. हाल ही में किस भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी ने आइपीएल क्रिकेट में एक हजार बाउंड्रीज (चौके और छक्के) लगाने का रिकॉर्ड बनाया?
4. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को किस देश में 'सिटी की ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया?
5. भारत के वर्तमान विदेश मंत्री कौन हैं?
6. दुनिया में सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान कौन-सा है?
7. किस भारतीय शहर को 'द सिटी ऑफ पैलेस' कहा जाता है?
8. लोकनायक के नाम से किन्हें जाना जाता है?
9. भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर का पहला माह कौन सा है?
10. केरल की राजधानी कहां है?

बच्चों, जीके क्विज-150 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-149 का उत्तर : 1.बिहार, 2.राजनाथ सिंह, 3.चंडीगढ़, 4.पोरबंदर (गुजरात), 5.प्रशांत महासागर, 6.कोलकाता में, 7.वेटिकन सिटी, 8.अकबर, 9.के-2, 10.हरिवंश राय बच्चन

जीके क्विज-149 का सही उत्तर देने वाले : साकेत-दुर्ग, कबीर-हिसार, सुमन-रायपुर, संकेत-बिलासपुर, आर्यन-रोहतक, प्रज्ञा-धमतरी, राहुल-बालोद, प्रिया-महासमुंद, गौतम-दिल्ली, कनक-बलौदा बाजार, त्रिशा-राजनांदगांव

कहानी
मंजरी शुक्ला

अबीर अपने मामा जी और दोस्त हर्षित के साथ पिकनिक मनाने के इरादे से नदी किनारे आया। लेकिन तीनों नदी के आस-पास का नजारा देखकर दुखी हो गए। असल में वहां गंदगी बहुत थी। तो क्या तीनों पिकनिक का इरादा छोड़कर वापस लौट गए या वहां कुछ अनहोनी हो गई?

मुस्कुरा उठी नदी

तुम्हारे मामा इतनी दूर से तुमसे मिलने आए हुए हैं और तुम अपने कमरे में बैठे हुए हो!' मामा जी यह कहते हुए एकाएक अबीर के सामने आकर खड़े हो गए।

अबीर खुशी से उनसे लिपट गया, 'अरे! आप कब आ गए मामाजी?' 'आया तो अभी हूं। आज हम नदी किनारे पिकनिक मनाने चलेंगे।' मामा जी अबीर के गाल पर प्यार से चपत मारते हुए बोले।

अबीर तुरंत बोला, 'मामा जी, मैं अपने दोस्त हर्षित के घर जाकर उसे भी ले आता हूं। वह भी हमारे साथ पिकनिक मनाने चलेगा।' थोड़ी ही देर बाद मामा जी के साथ कार में बैठकर अबीर और हर्षित पिकनिक के लिए निकल गए। दोनों मजे से मामा जी से बात करते हुए चले जा रहे थे। मामा जी ने बताया, 'मेरे गांव में नदी का पानी इतना स्वच्छ और निर्मल रहता है कि सभी लोग नदी के पास किसी घने पेड़ के नीचे बैठकर अपना सुख-दुःख बांटते हैं, प्रकृति के करीब काफी समय बिताते हैं फिर शाम तक घर लौटते हैं।'

अबीर बोला, 'अच्छा! मामा जी इसी तरह की और बातें भी हमें बताएं ना!' मामा जी ने अपने बचपन की यादों का पिटारा खोल दिया। बातों ही बातों में न जाने कितना समय निकल गया, कुछ पता ही नहीं चला।

तभी हर्षित खुशी से चिल्लाया, 'ठंडी हवा आने लगी है, मतलब हम नदी के पास पहुंच गए हैं।' मामा जी ने एक जगह रुक कर गाड़ी लॉक की और बोले, 'आज हम लोगों को बहुत मजा आएगा।' 'यहां तो एक अजीब-सी बदबू आ रही है।' अबीर ने नाक पर हाथ रखते हुए कहा। थोड़ा आगे बढ़े तो हर्षित बोला, 'लग रहा है यहां पर लोग पिकनिक मनाने नहीं बल्कि अपने घर का कूड़ा डालने के लिए आए हैं।' 'वह आंटी तो पूरा बैग भरकर प्लास्टिक और अगरबत्ती के पैकेट नदी के अंदर डाल रही हैं।' मामा जी उस ओर इशारे करते हुए बोले। 'चारों तरफ चिप्स और बिस्किट के पैकेट बिखरे पड़े हुए हैं।' हर्षित धीरे से बोला।

'हम लोग कहीं और चलकर पिकनिक मनाते हैं।' अबीर मुंह बनाते हुए बोला। हर्षित ने भी सहमति जताई, 'अबीर सही कह रहा है। हम इतनी गंदी जगह बैठ कर पिकनिक नहीं मनाएंगे। यहां बैठकर खाना-पीना दूभर हो जाएगा।'

लेकिन मामा जी तो अपने आप में खोए हुए एकटक नदी की तरफ देखे जा रहे थे। कुछ देर बाद वह बोले, 'यही नदी हमारे गांव तक भी जाती है। वहां इसका पानी इतना साफ होता है कि तुम्हें गहरे पानी की मछलियां भी तैरती हुई साफ नजर आएंगी। सच बात तो यह है कि नदी गंदी नहीं होती है। हम इंसान मिलकर उसे गंदा या साफ बनाते हैं।'

'पर हम कर भी क्या सकते हैं? अगर हम इन लोगों को समझाएंगे तो क्या ये हमारी बात सुनेंगे?' अबीर दुखी स्वर में बोला। अबीर की बात सुनकर मामा जी ने इधर-उधर देखा। वहां पर खड़ी पुलिस की एक गाड़ी पर उनकी नजर पड़ी। वह तेजी से गाड़ी की ओर बढ़ गए। हर्षित डर गया और अबीर से बोला, 'अब तो पुलिस वाले मामा जी को पकड़ लेंगे।'

'तू थोड़ा कम डरा कर।' अबीर अपने दोस्त हर्षित के गाल पर चपत मारते हुए बोला।

मामा जी जब बहुत देर तक पुलिस वालों से कुछ बात करते रहे तो हर्षित से न रहा गया, बोला, 'लगता है पुलिस वालों से मामा जी की बहस हो रही है। चलो, चलकर उन्हें बचाते हैं।'

एक ही पल बाद मामा जी पुलिस इंस्पेक्टर और उसके तीन सिपाहियों के साथ एक दूसरी ओर जाते हुए दिखे। सभी उन लोगों के पास पहुंचे, जो नदी में और उसके आस-पास गंदगी फैला रहे थे। सिपाहियों ने उन लोगों से न जाने क्या कहा कि उनकी बात सुनते ही सभी के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं। सबने तुरंत सारा कूड़ा उठाकर मैदान में एक ओर लगे कचरे के डिब्बों में फेंक दिया। कुछ लोग तो अपने आप नदी के किनारे से प्लास्टिक की बोतलें वगैरह उठाकर कूड़े के डिब्बों में डालने लगे, जो उन्होंने फेंकी भी नहीं थी। देखते ही देखते वहां सब साफ-सुथरा नजर आने लगा।

मामा जी एक पेड़ की छांव के नीचे खड़े होकर हंसते हुए बोले, 'तो अब इस स्वच्छ जगह पर बिछा लें हम लोग अपनी चटाई और शुरू करें पेट पूजा?' लेकिन अबीर मामा जी का हाथ पकड़ते हुए बोला, 'पहले आप बताएं कि आपने उन पुलिस वालों से क्या कहा?' 'जब मैंने पुलिस वालों को बताया कि नदी इतनी गंदी हो रही है, इसका पानी काला हो रहा है तो उन्होंने कहा कि हम तो बहुत मना करते हैं पर कोई मानता ही नहीं है।' 'फिर आपने क्या कहा?' हर्षित ने उत्सुकता से पूछा। 'तो मैंने कहा कि आप उनसे यह क्यों नहीं बताते कि यही पानी, प्रोसेस होने के बाद नलों के द्वारा उनके घरों तक जाता है।' मामा जी गंभीर स्वर में बोले। अबीर ने मासूमियत से पूछा, 'तो क्या सचमुच इस नदी का ही पानी हमारे घरों में आता है?'

'और क्या, तुम्हारे घर की पानी की टंकी को भरने के लिए क्या हर बार बरसात होगी?' मामा जी ने हंसते हुए कहा। मामा जी के साथ अबीर और हर्षित भी हंस पड़े। तीनों ने पेड़ की छांव में बहती ठंडी हवा में अपने साथ लाए भोजन का मजा लिया। जब वहां से उठने लगे तो मामा जी ने ध्यान दिया कि लोग खाना खाकर प्लास्टिक और डिस्पोजेबल प्लेट नदी में नहीं फेंक रहे थे बल्कि अपने साथ लाए थैलों में रख रहे थे।

मामा जी ने नदी की तरफ बहुत ही प्यार से देखा और खुशी के मारे अपनी नम आंखें पोंछ लीं। उन्हें लगा जैसे नदी मुस्कुरा रही है। नदी को लग रहा है कि वो अब हमेशा स्वच्छ-निर्मल रहेगी। *

कविता
देवी प्रसाद गौड़

धरती मां हम सबकी मां है

प्राण पले जिसकी गोदी में,
उस पृथ्वी को शीश झुकाएं।
कण-कण रहे सुगंधित इसका,
हरित क्रांति से धरा सजाएं।।
शुद्ध हवा से रोग मरेंगे,
पेड़ों पर चिड़िया चहकेंगी।
तन ताजा हो मन में मस्ती,
फूलों की बगिया महकेंगी।।
खाने को अन्न दिया तुमने,
पीने, अमृत जैसा पानी।
अमृत में विष नहीं घुलेगा,
बहुत हुई अब तक नादानी।।
दूर रहें नदियों से नाले
अलग व्यवस्था करनी होगी
हर जीवन पानी का प्यासा,
सबकी पीड़ा हरनी होगी।।
धरती की हर सांस प्रदूषित,
वर्षों से बीमार बेचारी।
धरती मां हम सबकी मां है,
समझें अपनी जिम्मेदारी।।
स्वच्छ रखेंगे सड़क जलाशय,
मिल-जुल कर करते श्रमदान।
शहर-नगर या गली गांव की,
इनसे बनती अपनी शान।।
हम भविष्य हैं इस पृथ्वी के,
सेवा है संकल्प हमारा।
जहरीला परिवेश हो गया,
पाना है इससे छुटकारा।।
रहें समर्पित जीवन भर,
फिर औरों को भी समझाएं।
एक रोज क्यों मने वर्ष में
हर दिन पृथ्वी दिवस मनाएं।।

रंग भरो-173

रंग भरो-173 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।

समृद्धि, शहडोल

सौम्य, बालोद

अन्वीक्षा, दुर्ग

आस्तिका, चांपा

सार्थक, रायपुर

वैदिक, कोरबा

इनके भी चित्र रहे प्रशंसनीय

डॉली-दुर्ग, आदित्य-खैरागढ़, डिपल-दुर्ग, डिपल-दुर्ग, राशि-दुर्ग, सत्यम-रायपुर, अमन-कोरबा, लक्षम-बिलासपुर, दिव्या-रायगढ़, जतिन-रोहतक, काव्या-महासमुंद, जीविका-बलौदा बाजार, सौम्या-भेपाल, आद्या-हिसार, कुसुम-बिलासपुर, राशि-दिल्ली

रंग भरो 174

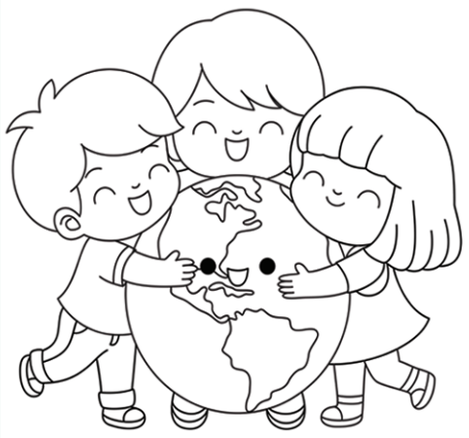

बच्चो, यहां पर 'पृथ्वी दिवस' से जुड़ा एक ब्लैक एंड व्हाइट चित्र दिया गया है। तुम इस चित्र को मनचाहे रंगों से रंग कर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे हम **बालभूमि** में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजो- संपादक - फीचर, हरिभूमि कार्यालय, 129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली- 110035 या ई-मेल आईडी balbhoomihb@gmail.com पर मेल करो।